Volume : 3 | Issue : 2 | Feb 2014 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Literature

रामकथा एक यात्रा
(Raamkatha ek yatra)

Pro. D. S. Chaudhry

Hindi VeeBhag, S. D. Arts & R. Commerce Collage, Mansa.

KEYWORDS :

वाल्मीकि रचित रामायण में जिन स्थानों का उल्लेख हुआ है बाद में वहा के

साहित्य और संस्कृति पर रामकथा का वर्चस्व स्थापित हो गया था | रामकथा साहित्य के

विदेशी भ्रमण की तिथि और दिशा निर्धारित करना अति कठिन कार्य है | फिर भी दक्षिण

पूर्व एशिया के शिलालेख से तिथि की समस्या का निराकरण हो जाता है | इससे स्पष्ट हो

जाता है की लगभग पहली शताब्दी में रामायण वह पहुच गई थी | कुछ अन्य आधारों पर

यह भी मालूम होता है की सबसे पहले दक्षिण-पूर्व एशिया की और प्रवाहित हुई | दक्षिण-पूर्व एशिया की प्राचीन एवं महत्वपूर्ण रचना जावानी भाषा में लिखित रामायण का प्रमाण है जिसका समय नौवी शताब्दी के आसपास है | इसके रचनाकार योगीश्वर है | लगभग पंद्रवी शताब्दी में इंडोनेशिया के इस्लामीकरण के बाद जुद वहाँ जावानी भाषा में सेरतराम,

सेरातकांड,राम के लिगि आदि,अनेक रामकथा काव्यो की रचना हुई | इनके आधार पर अनेक विद्वानों ने राम साहित्य का अध्ययन किया | इंडोनेशिया के बाद हिन्द और चीन भारतीय संस्कृति का गढ़ मन जाता था | इस क्षेत्र में पहली से पन्द्रवी शताब्दी तक भारतीय संस्कृति का वर्चस्व रहा | कयुचिया के अनेक शिलालेखो में रामकथा की चर्चा देखने को मलिती है | अधिक आश्चर्य इस बात का है की चंपा के प्राचीन शिलालेख में वाल्मीकि का मंदिर का उल्लेख मिलता है ,वास्तव में चंपा में रामकथा के नाम लोककथाए ही मलिती है |

लाओस के अपने को भारतवंशी मानते है | उनका कहना है की कलिंग युद्ध के बाद उनके पूर्वज यहाँ आकार बसे थे | लाओस की संस्कृति पर भारतीय संस्कृति की छाप गहरी दिखाई देती है | इस विस्तार में रामकथा आधारित चार रचनाएँ मलिती है रामजाताक,रावाय थोरकी ,ब्रल्चक्र और लंकालोई | लाओस की रामकथा का अध्ययन अनेक विद्वानों ने किया है | थाईलेंड का रामकथा साहित्य समृद्ध है | थाईलेंड में रामकथा आधारित निम्नलिखित रचनाएँ मलिती है |

1. तासकनि रामायण
2. सम्राट राम प्रथम की रामयण |
3. सम्राट राम द्रतिीय की रामायण |
4. सम्राट राम चतुर्थ की रामायण |
5. सम्राट राम चतुर्थ की रामायण (संवादात्मक)
6. सम्राट रामषष्ठ की रामायण |

नई खोजो के अनुसार ब्रमा में रामकथा साहित्य की लगभग १६ रचनाएँ

मलिती है |जनिमे रामवत्थु सबसे प्राचीन रचना मणि कही जाती है |मलेशिया में रामकथा से संबधित चार रचनाएँ मलिती है |

1. हकियत सेरी राम |
2. सेरी राम
3. पातानी राम
4. हकियत महाराज रावण

बुध्ध जातक के माध्यम से चीन में रामकथा पहुंची थी ऐसा माना जाता है | चीन

में अनामक जातक और दशरथ कथानक नामक ग्रंथो का तीसरी और पांचवी शताब्दी में अनुवाद किया गया था | इन दोनों रचनाओ का चीनी अनुवाद तो मलिता है परन्तु वे रचनाएँ आज उपलब्ध नहीं है | तिब्बती रामायण की कुछ पाण्डुलिपियाँ मलिती है जो हुआन नामक स्थल से प्राप्त हुई थी | इनके अतिरिक्त रामकथा आधारित दमर-स्टोन तथा संघ श्री रचित दो अन्य रचनाएँ भी मलिती है |

तुरकिस्तान के पूर्वी भाग को खोतान कहा जाता है | इस क्षेत्र की भाषा खोतानी है |

खोतानी रामायण की प्रत पेरिस की पाण्डुलिपि संग्रहालय से प्राप्त हुई है | इस रचना पर तिब्बती रामायण का प्रभाव अधिक दिखाई देता है | चीन के मंगोलिया में भी रामकथा आधारित साहित्य मलिता है | यहाँ जीवत जातक नामक तथा अन्य तिन रचनाएँ मलिती है | इन तिन रचनाओ पर रामचरित मानस का विवरण मलिता है| जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह होबुत्सुशु में संक्षिप्त में रामकथा संकलित है |

श्रीलंका में कुमारदास द्वारा संस्कृत में रचित जानकी हरण नामकप्राप्त होती है |

यहाँ सिंहली भाषा में भी एक रचना मलिती है जिसका नाम मलयराजकथाव है | नेपाल में भी अनेक रामकथाएँ मलिती है |

राम का अर्थ राम यात्रा पथ

आदि कवि वाल्मीकि रचित रामायण न केवल इस अर्थ में प्रसिध्ध है की यह देश-विदेश की अनेक भाषओं के साहित्य में तिनिसों से अधिक रचनाएँ उपलब्ध है बल्कि इस संदर्भ में प्रसिध्ध है की इसने नाटक, संगीत ,मूर्ति तथा चित्र कलाओ को भी प्रभावित किया है | रामायण होमर रचित इलियड तथा ओडेसी रचित आइनाइड ओर दांते रचित डिवाईन कोमेज की तरह संसार का श्रेष्ठ महाकाव्य है |

रामायण का विश्लेषित रूप राम का अयन है -जिसका अर्थ राम का यात्रा पथ होता है | क्योंकि अयन यात्रा का पर्यायवाची शब्द है, इसमें राम की दो विजय यात्राएँ है | प्रथम यात्रा प्रेम-संयोग, हास-परिहास, तथा आनंद उल्लास से परिपूर्ण है तो दूसरी

क्लेश-कलांति, वियोग,व्याकुलता,विशिता और वेदना से भरी है | विश्व के अधिकतर विद्वान दूसरी यात्रा को रामकथा का मूल आधार मानते है | एक श्लोक में राम वन गमन से रावण वध तक की कथा निरूपित हुई है

अदौ राम तपोवनादी गमनं हत्वा मृगं कांचनम |
वैदेहि हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम |
वाली निग्रहणं समुद्र तरणं लंका पूरी दास्यम |
याश्याद रावण कुलकर्ण हननं तहदि रामायणम |

रामकथा की विदेश यात्रा के संदर्भ में सीता की खोज,यात्रा का विशेष महत्व है | वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा कांड के चलिस से तैतालिस अध्यायों के बिच इसका विस्तृत वर्णन हुआ है जो दीर्घ वर्णन के नाम से विख्यात है | इसके अंतर्गत वानरराज,बलि ने विभिन्न दिशाओ में जाने वाले दूतो को अलग अलग दिशानिर्देश दिया जिससे एसिया के समकालीन भूगोल की जानकारी मलिती है | इस दिशा में कई महत्व पूर्ण शोध हुए है जिससे वाल्मीकि द्वारा वर्णित स्थानों को विश्व के

आधुनिक मान चित्र पहचानने का प्रयत्न किया गया है | कविराज

सुग्रीव ने पूर्व दिशा में जाने वाले दुतो के साथ राज्यों से सुशोभित दीप (जावा) सुवर्ण दिप (सुमात्रा) में प्रयत्न पूर्वक सीता को तलाश ने का आदेश दिया था | इसी क्रम में यह भी कहा गया था की यवद्वीप शिशिर नामक पर्वत है जिसका शिखर स्वर्ग को स्पर्श करता है और जिसके उपर देवता तथा दानव निवास करते है |

जावा द्दिप और उसके निकटवर्ती क्षेत्र के वर्णन के बाद दुतगामी,शोणनद तथा काले मेघ के समान दिखाई देनेवाले समुद्र का उल्लेख हुआ है जिसमे भारी गर्जना होती रहती है | इस समुद्र के मध्य ऋषभ नामक श्र्वेत पर्वत है जिसके उपर सुदर्शन नामक `सरोवर है |

रामायण के प्रासंगिक प्रसंगों के आधार पर विदेश में स्थलों का नामकरण

भारतवासी जहाँ भी गये वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को तो उन लोगो ने प्रभावित किया है साथ-साथ वहाँ के स्थनों के नाम भी भारत के नाम अनुसार रख दिए|

कहा गया है की इंडोनेशिया के सुमात्रा द्दिप का नामकरण सुमित्रा के नाम पर हुआ था |

जब मेघनाद के बाण से मुर्छित लक्ष्मण के उपचार के लिए हनुमान औषधि लेने गधमादन पर्वत पर गये थे वह मलाया के प्राय द्दिप में ही था | एक अन्य मान्यता यह भी है की बर्मा का पोपा पर्वत औषधियौ के लिए प्रख्यात था तो लक्ष्मण के उपचार हेतु

हनुमान पर्वत के कुछ भाग को उखाडकर ले आए थे और वापस जाने पर वह जमीन पर गिर गये थे उस स्थान पर एक बड़ी झील बन गयी थी वह आज भी है | अत: हम कह सकते है की वहा के लोग प्राचीन काल से ही रामायण से परिचित थे |

थाईलेंड का प्राचीन नाम स्याम था | थाई नरेश रामातिबौदी ने १३५०इ. में अपनी राजधानी का नाम अयुध्या (अयोध्या) रखा जहाँ कुल ३३ राजाओ ने राज किया|

जिसमे राम प्रथम से राम नवम तक का इतिहास है | वियतनाम का प्राचीन नाम चंपा था जिसकी पुष्टि सातवीं शताब्दी के एक शिलालेख से मिलती है जिसमे वाल्मीकि के मंदिर का उल्लेख हुआ है जिसका पुन:निर्माण प्रकाश धर्म नामक सम्राट ने करवाया था|

संक्षिप्त में कहे तो भारतवासी जहाँ भी गये वहाँ सभ्यता और संस्कृति के साथ साथ भौतिक साधनों और आस्था भी ले गये थे | भौतिक साधनों का तो कालांतर में विनाश हो गया लेकिन उनके विश्र्वास का वृक्ष फलता-फूलता रहा |

यात्रा की व्यापकता

रामायण के रचनाकार वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य रामायण की इतनी भव्य ईमारत खड़ी की है की आने वाले कालक्रम में उस पर मंझिल पर मंझिल बनती रहे फिर भी उसकी नीव खसिकती नहीं और बड़े से बड़ा भूकंप भी उसे हिला न पाये | रामायण का रचनात्मक स्वरूप इतना सशक्त और जीवंत है की अन्य कोई रचना इसका स्थान ली पायी हो | देशकाल के परिवर्तन के साथ रामायण में भी परिवर्तन आता गया और उसे देश-विदेशी साहित्यकरो ने अपने अपने विचारों से सजाया | अत: इसीलिए कहा गया है की रामकथा पर जितनी मौलिक रचनाएँ मिली है उतनी किसी अन्य रचना की नहीं मिली | रामकथा की यात्रा की व्यापकता को देखे तो रामकथा का नायक राम मर्यादा पुरषोतम है जो समस्त मानव-मूल्यों की रक्षा करने में समर्थ है | रामायण का सत्य और सौन्दर्य शिव मय और आनंदमय से परिपूर्ण है |

REFERENCES

१ वाल्मीकि रामायण | २ शर्मा, तारानाथ ,नेपाली साहित्य का इतिहास | ३ वर्मा सुधा,आग्नेय एशिया में रामकथा | ४ Tilak siri j. Ramayana in shilanka and its folk verson. | ५ Itaid | ६ Raghavan, v ., The Ramayana in Greater india. | ७ Sahai,Sachchidanand,The Ramayana in laos. | ८ Sarkar,H.B.,The Ramayana Tradition in Asia. | ९ Dr.jong,j.w.,The Story of Rama in Tibet. | १० Dumdin suren,t,s.,The Ramayana in Mongolia. | ११ Raghuvir,and Yamamoto,The Ramayana in china. |